IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)

बिहार शोध समागम BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 1, January-March, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

ISSN : 3048-6971

कलचुरिकालीन अर्थजगत सिंचाई के कृत्रिम साधनों अध्ययन अभिलेखों के संदर्भ में

ममता सिंह कुशवाहा
शोध छात्रा एम.ए.एमफिल इतिहास
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, मध्य प्रदेश
डॉ. सुधा सोनी
प्राध्यापक
शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रीवा, मध्य प्रदेश

https://doi.org/10.5281/zenodo.19372259

शोध सारांश

किसी भी देश की राजनीतिक स्थिरता एवं सांस्कृतिक उन्नति वहाँ की आर्थिक नीतियों और उनके अनुपालन के फलस्वरूप उत्पन्न अवस्थाओं पर भी निर्भर करते हैं। प्राचीन काल से ही भारत में अर्थतन्त्र को सुदृढ़ करने के लिए बहुतेरे प्रयोग किये जाते रहे हैं। इस सन्बन्ध में दी गयी व्यवस्थाओं में निरन्तर परिवर्तन एवं उनमें काल सापेक्ष परिवर्धन सदैव अपेक्षित रहा है। जिस तरह भारत की सामाजिक–राजनीतिक परम्परा में जीवन के विविध पक्षों को निरूपित करने एवं उनका पुनरीक्षण करने एवं उसे और उपयोगी बनाने के लिए सुस्पष्ट श्रेणीबद्ध वर्गीकरण को तरजीह दी जाती रही है उसी तरह अर्थव्यवस्था से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर भी इतिहास के विभिन्न काल–खण्डों में व्यवस्थायें दी जाती रहीं हैं। सिंचाई के कृत्रिम साधनों के बारे में भी हमें अभिलेखों से ज्ञात होता है। जिन स्थानों पर जल संचयन की सुविधा उपलब्ध नहीं थी अथवा जिन क्षेत्रों से नदियों नहीं गुजरती थीं उन क्षेत्रों में तालाबों एवं नहरों आदि के माध्यम से जल की उपलब्धता सुनिश्चित कराई जाती थी।

प्रस्तावना

देश की राजनीतिक स्थिरता एवं सांस्कृतिक उन्नति वहाँ की आर्थिक नीतियों और उनके अनुपालन के फलस्वरूप उत्पन्न अवस्थाओं पर भी निर्भर करते हैं। प्राचीन काल से ही भारत में अर्थतन्त्र को सुदृढ़ करने के लिए बहुतेरे प्रयोग किये जाते रहे हैं। इस सन्बन्ध में दी गयी व्यवस्थाओं में निरन्तर परिवर्तन एवं उनमें काल सापेक्ष परिवर्धन सदैव अपेक्षित रहा है। जिस तरह भारत की सामाजिक–राजनीतिक परम्परा में जीवन के विविध पक्षों को निरूपित करने एवं उनका पुनरीक्षण करने एवं उसे और उपयोगी बनाने के लिए सुस्पष्ट श्रेणीबद्ध वर्गीकरण को तरजीह दी जाती रही है उसी तरह अर्थव्यवस्था से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर भी इतिहास के विभिन्न काल–खण्डों में व्यवस्थायें दी जाती रहीं हैं। कलचुरिकालीन अभिलेखों के अध्ययन से हमें उस काल के आर्थिक जीवन के बारे में ढेरों जानकारियाँ मिलती हैं। भारत सदा से ही एक गाँव में बसने वाला कृषि प्रधान देश रहा है। कलचुरि अभिलेखों में भी हमें अनेक गाँवों का उल्लेख मिलता है जिनसे कृषि कार्य करने के तरीकों का भी पता चलता है और साथ–ही–साथ वाणिज्य–व्यापार एवं पशुपालन आदि अर्थव्यवस्था से जुड़े विभिन्न मुद्दों का भी संदर्भ मिलता है।

खेती करने का तरीका प्रायः पाराम्परिक ही था जिसमें जानवरों की मदद से जुताई–बुआई का कार्य किया जाता था। लक्ष्मणराज द्वितीय के कारीतलाई शिलालेख से कृषि कार्य से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश पड़ता है। इसमें अन्नसंग्रह के लिए प्रयोग किये जाने वाले खलिहान की चर्चा (खलभिक्षाश्चतत्रश्च) मिलती है। ऐसे ही शबर के बड़गाँव शिलालेख में भी खलिहान (खला (ल) भिषा (क्षा)) 2 की चर्चा मिलती है। उपरोक्त दोनों ही प्रसंगों में 'खलभिक्षा' शब्द का प्रयोग हुआ है जिसे डॉ० मिराशी ने राज्य को अन्न के रूप में दिया जाने वाला कर माना है। सिंचाई के लिए दोनों तरह के साधनों–प्राकृतिक एवं कृत्रिम का प्रयोग कलचुरि काल में होने के प्रमाण विभिन्न अभिलेखों में मौजूद हैं। कलचुरि शासित क्षेत्रों में बहने वाली ढेरों नदियों की चर्चा अभिलेखों में कई बार हुई है। सरयू, नर्मदा, महानदी एवं सरयू आदि विशाल नदियों के चहुँओर संचरण से यह क्षेत्र उत्पादकता के मामले में निश्चित रूप से बेहद उपजाऊ रहा है। इस क्षेत्र की भौगोलिक विविधता की झाँकी भी हमें अनेक अभिलेखों में मिलती है जहाँ छोटी–मोटी झीलों, झरनों, उपनदियों आदि का जिक्र बार–बार किया गया है जो उस काल में सिंचाई के एकाधिक प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता इंगित करता है।

सिंचाई के कृत्रिम साधनों के बारे में भी हमें अभिलेखों से ज्ञात होता है। जिन स्थानों पर जल संचयन की सुविधा उपलब्ध नहीं थी अथवा जिन क्षेत्रों से नदियों नहीं गुजरती थीं उन क्षेत्रों में तालाबों एवं नहरों आदि के माध्यम से जल की उपलब्धता सुनिश्चित कराई जाती थी। इस संदर्भ में कलचुरि सम्वत् 909 में निर्मित नरसिंह क लालपहाड़ शिलालेख (पत्र 1) की चर्चा की जा सकती है जिसमें कायावादित्य के पुत्र बल्लालदेव के द्वारा एक नहर (वहः) के निर्माण के बारे में जानकारी दर्ज है। नरसिंह के ही आल्हाघाट शिलालेख मे जाल्हण के पुत्र छिहुला द्वारा देवी अंबिका के मंदिर के समीप षटषडिका नामक घाट के निर्माण की बात भी

दर्ज है। कलचुरि सम्वत् 944 में निर्मित विजयसिंह के रीवा शिलालेख, जिसका उल्लेख किया गया है, श्लोक 40 व 41 में मलयसिंह द्वारा 1500 टंक खर्च कर बनवाये गये एक विशाल तालाब की चर्चा मिलती है। ऐसे ही रत्नदेव द्वितीय के अकलतारा शिलालेख में हरिगण के पुत्र प्रमुख वैश्य सामन्त वल्लभराज द्वारा सूर्यपुत्र रेवन्त के मंदिर के समीप एक विशाल एवं दिव्य सरोवर के निर्माण से सम्बन्धित जानकारी दर्ज है। उक्त सरोवर वल्लभसागर नाम से प्रसिद्ध हुआ। लक्ष्मणराज द्वितीय के कारीतलाई शिलालेख के श्लोक पाँच में मंत्री भाकामिश्र द्वारा मंदिरों के साथ–साथ तालाबों एवं सीढ़ियों से युक्त कूँओं के निर्माण की चर्चा मिलती है। कलचुरि सम्वत् 866 में निर्मित जाजल्लदेव प्रथम के रतनपुर शिलालेख के श्लोक 17 में पृथ्वीदेव प्रथम द्वारा तुमन्ना में एक समुद्र के समान विशाल सरोवर के निर्माण की बात दर्ज है। कलचुरि सम्वत् 915 में निर्मित पृथ्वीदेव द्वितीय के रतनपुर शिलालेख के श्लोक 24, 27, 30 एवं 35 में क्रमशः एक तालाब, कमल से आच्छादित सरोवर एवं सीढ़ियों से युक्त एक विशाल एवं सुन्दर कुँए तथा चरीय नामक गाँव में एक रमणीक झील के निर्माण की जानकारी अंकित है।

इनके अलावा भी हमें विभिन्न अभिलेखों में राज्य के अधिकारियों, राजपरिवार से सम्बन्धित अन्य व्यक्तियों, सामन्तों और यहाँ तक की राज्य के सामान्य नागरिकों द्वारा भी कृत्रिम झीलों एवं सिंचाई के लिए उपयोगी विशाल सरोवरों के निर्माण के बारे में जानकारी मिलती है। जाजल्लदेव द्वितीय के शिवरीनारायण शिलालेख के श्लोक 38 में रानी रम्भाला द्वार वणारी नामक गाँव में एक सुन्दर झील का निर्माण कराने सम्बन्धी सूचना अंकित है। कलचुरि सम्वत् 910 में निर्मित पृथ्वीदेव द्वितीय के रतनपुर शिलालेख के पंक्ति 24 एवं 25 में बल्लभराज द्वारा रतनपुर के पूर्व में स्थित खाड़ा नामक गाँव के समीप स्थित पहाड़ियों के बीच एक बाँध के निर्माण, सड़ाविडा नामक गाँव के नजदीक स्थित पहाड़ी के समीप एक छोटे से तालाब एवं रत्नेश्वरसागर नामक विशाल सरोवर के निर्माण, विकर्णपुरा के बाहरी हिस्से में विशाल तालाब के निर्माण और देवपर्वत के नजदीक एक काफी गहरे कुँए के निर्माण सम्बन्धी जानकारी दर्ज है। कलचुरि सम्वत् 866 में निर्मित जाजल्लदेव प्रथम के रतनपुर शिलालेख के श्लोक 27 में एक विहार एवं आम के बगीचे के साथ–साथ जाजल्लदेव द्वारा एक सुन्दर झील के निर्माण की बात भी अंकित है। कलचुरि सम्वत् 724 में निर्मित प्रबोधशिव के चन्द्रेहे शिलालेख के श्लोक 17 में प्रशान्तशिव द्वारा खुदवाये गये गहरे कँए की मरम्मत से सम्बन्धित जानकारी दर्ज है। इस प्रकार हम देखते हैं कि कलचुरि अभिलेखों में उस काल में कृत्रिम सिंचाई साधनों के निर्माण सम्बन्धी काफी जानकारी उपलब्ध है जो इस बात का प्रमाण है कि उस काल में कृषक सिर्फ प्रकृतिप्रदत्त संसाधनों पर ही आश्रित नहीं थे। उस काल में कृषि निश्चित रूप से काफी उन्नत थी और लोगों की आय का एक स्थायी स्रोत थी। रत्नदेव तृतीय के खरोद शिलालेख में अंकित श्लोक संख्या 25 एवं 26 जिनमें राज्य में पड़े विकट अकाल की चर्चा की गई है, के अलावा किसी भी अन्य कलचुरि अभिलेख में उस काल की जनता को प्राकृतिक आपदाओं के चलते किसी भी तरह की विकट परिस्थितियों का सामना करने की बात सामने नहीं आती। यह भी इस बात का प्रमाण है कि कृषि कार्य में लगे लोगों का जीवन सामान्यतया सन्तोषजनक था। इसके अतिरिक्त इस पूरे काल खण्ड में राजाओं एवं सामन्तों द्वारा भूमि को अधिकाधिक दान में देने की बात ढेर सारे अभिलेखों में दर्ज है। इसको इतिहासकारों ने राज्य की सोची–समझी रणनीति का हिस्सा माना है जिसके तहत बंजर, अनुपजाऊ एवं शुष्क क्षेत्रों में स्थित भूमि को उपजाऊ एवं कृषि योग्य बनाने के लिए दान में दिया जाता था। इससे न केवल राज्य की आय में वृद्धि होती थी बल्कि अनुपजाऊ भूमि भी कृषि योग्य हो जाया करती थी। कई अभिलेखों में दर्ज सूचना के अनुसार दान में दी गई भूमि पर सामान्यतः लगने वाले सारे कर माँफ कर दिए जाते थे। उपरोक्त तथ्यों की विवेचना करने पर स्पष्ट होता है कि जहाँ एक तरफ कृषि कार्य में लगे लोग काफी जागरूक एवं निपुण थे वहीं राज्य भी कृषि के विकास एवं उसे और अधिक उन्नतिशील बनाने के लिए बेहद गम्भीर एवं निरन्तर प्रयत्नशील था।

सन्दर्भ–

1. सी० आई० आई०, जि० 4. भाग 1, अभिलेख सं० 42, श्लोक 42, पृ० 191
2 वही, अभिलेख सं० 43, पंक्ति 3, पृ० 197
3. वी. वी. मिराशी, सी. आई. आई., जिला 4, भाग 1, फुटनोट 1, पृष्ठ 198
4. सी० आई० आई०, जि० 4. भाग 1, अभिलेख सं० 61, पंक्ति 6, पृ० 322
5. वही, अभिलेख सं० 62, पंक्ति 4, पृ० 324
6. वही, अभिलेख सं० 67, पंक्ति 4, पृ० 353
7. वही, भाग 2, अभिलेख सं० 84, श्लोक 23, पृ० 433
8. वही, श्लोक 24
9. वही, भाग 2, अभिलेख सं० 42, पृ० 189
10. ए० एल० बाशम, टी० डब्ल्यू० टी० आई०, पृ० 191
11. चाणक्य, अर्थशास्त्र, 11.2, वाराणसी,